

अरावली पुनर्जनन योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में दलिली वन वभाग ने अरावली के दुर्लभ देशी पेड़ों के संरक्षण के लिये [असोला-भट्टी वन्यजीव अभयारण्य](#) में एक ऊतक संस्कृति प्रयोगशाला की स्थापना की पहल की है।

मुख्य बदि:

- **ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला:** प्रयोगशाला एक इन-वटिरो पूर्ण वकिसति पौधे-से-पौधे के ऊतकों को निकालने में सकषम होगी, जिससे एक ही वृक्ष से कई वृक्ष तैयार किये जा सकेंगे।
- वन वभाग [भारतीय वानिकी अनुसंधान और शकिषा परषिद \(ICFRE\)](#) एवं [वन अनुसंधान संस्थान \(FRI\)](#) के वनस्पतविज्ज्ञानियों व वैज्ज्ञानिकों से सहायता लेगा।
- प्रयोगशाला का प्राथमकि लक्ष्य नयित्तरति वातावरण में लुप्तप्राय देशी वृक्षों को उगाना और **आक्रामक प्रजातियों** के कारण पुनर्जनन चुनौतियों का सामना करने वाली प्रजातियों के पौधों को पुनर्जीवति करना है।
- टशू कल्चर कृषि में अत्यधिक प्रभावी साबति हुआ है, वशिष रूप से **केले, सेब, अनार और जेट्रोफा जैसी फसलों** के साथ, जो पारंपरिक खेती के तरीकों की तुलना में अधिक उपज प्रदान करता है।
- **अरावली योजना:**
- कुल्लू (घोस्ट टरी), पलाश, दूधी और धौ जैसी रजि प्रजातियों का पुनर्जनन आक्रामक प्रजातियों द्वारा बाधति होता है, जिसके परणामस्वरूप जीवति रहने की दर कम होती है, बड़े पैमाने पर गुणन केवल ऊतक संस्कृति, वशिष रूप से **शूट संस्कृति के माध्यम** से प्राप्त किया जा सकता है।
- प्रयोगशाला लुप्तप्राय **औषधीय पौधों** के संवर्धन में भी उपयोगी होगी।

असोला वन्यजीव अभयारण्य

- असोला-भट्टी वन्यजीव अभयारण्य एक महत्त्वपूर्ण वन्यजीव गलियारे के अंत में स्थति है जो अलवर में **सरसिका राष्ट्रीय उद्यान** से शुरू होता है और हरयिणा के मेवात, फरीदाबाद तथा गुरुग्राम ज़िलों से होकर गुज़रता है।
- इस क्षेत्र में उल्लेखनीय दैनकि तापमान भन्निता के साथ **अर्धशुष्क जलवायु** है।
- वन्यजीव अभयारण्य में वनस्पति मुख्य रूप से एक **खुली छतदार काँटेदार झाड़ियाँ** हैं। यह देशी पौधे जेरोफाइडकि अनुकूलन जैसे काँटेदार उपांग और मोम-लेपति, रसीले तथा टोमेंटोज पत्ते प्रदर्शति करते हैं।
- प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों में मोर, कॉमन वुडशराइक, सरिकीर मल्कोहा, नीलगाय, गोल्डन जैकल्स, स्पाँटेड हरिण आदि शामिल हैं।